संपादकीय

विज्ञानसम्मत है लोक का विश्वास

प्रायोगिक अनुसंधानों द्वारा सूक्ष्म, तथ्यपरक, साक्ष्यपूर्ण भौतिक निष्कर्षों का ज्ञान विज्ञान है। यह विशिष्ट विषय-क्षेत्र सुव्यवस्थित तथा क्रमागत होता है, इसलिए जब किसी विशुद्ध विज्ञानेतर विषय का क्रमबद्ध तथा सुव्यवस्थित अध्ययन करना होता है, तब उसे भी विज्ञान की श्रेणी रखा जाता है। इस निकष पर रसायन, भौतिकी, प्राणी, प्रकृति ही नहीं, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान, भाषा विज्ञान, समाज विज्ञान भी विज्ञान के दायरे में आ जाते हैं। लोकवार्ता एवं लोक साहित्य, जो अपने समय का संपूर्ण ज्ञान है, उसमें राजनीति, वनस्पति, मन-मस्तिष्क, प्रकृति, प्राणी, चिकित्सा, समाज, संस्कृति सबके निचोड़ का संयोजन है। निस्संदेह, परंपराओं, आस्थाओं, विश्वासों से आवृत्त इसके बहुत-सारे अंश अब रूढ़ि, अंधविश्वास की तरह लगते हैं, तथापि ये लोक जीवन के लंबे प्रामाणिक प्रयोगों से उद्‌भूत हुए है, जिनका पूर्व में पुष्ट आधार रहा है। याद कीजिए कि भड्डरी ने जब कहा कि चींटी का अंडा लेकर चलना बर्षा होने की संभावना है, तब कितनी बार देखा-परखा होगा, उस पर अनुसंधान किया होगा, तब यह सिंद्धांत गढ़ा होगा कि 'चींटी लै अंडा चलै, चिड़ी उड़ावै धूर, व्यास कहै सुन भड्डरी तौ बरसा नहीं दूर।' इसी प्रकार जब गिरगिट उलटा होकर ऊपर की ओर चढ़ता है, तब वर्षा से पृथ्वी पर जल बढ़ता है -'उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़े, बरखा होइ भूई जल बढ़े।' जीव-जंतु प्रकृति के प्रति अत्यंत संजीदगी-संवेदनशीलता रखते हैं, इसलिए भवितव्य की आहट देने में सक्षम होते हैं। भूकंप आने का पूर्वाभास पशु-पक्षियों के असामान्य व्यवहार से मिलता है; कुत्ते, बिल्ली भौंकने-भागने लगते हैं, पक्षियों की चहचहाहट बढ़ जाती है। यह सब आधुनिक विज्ञान ने माना और जाना है। लोकशास्त्र कहता है कि भूकंप के समय कुएँ के समीप जाना चाहिए, क्योंकि वह नहीं डोलता -'चक डोले चक बेलना डोले, खड़ा पीपल कभी न डोले।' कौए, टिटिहरी, बिल्ली, कुत्ता, सियार का असमय विशेषकर रात में बोलना-रोना अनहोनी की आशंका को जन्म देता है। दिन में सियार का बोलना अकाल पड़ने का संकेत है -'दिन में स्याल जो सबद करै, निस्वै है काल हलाहल पड़ै।' बिल्लियों का आपस में लड़ना निकट भविष्य में झगड़ा होने की निशानी है। यात्रा के शुरू में गधा का बोलना शुभ होता है। लोग कहेंगे कि यह सब तो लोकविश्वास, अंधविश्वास है, जो वैज्ञानिक तथ्यों के बिलकुल विपरीत है; पर विश्वास यों ही नहीं जमता, यह अनवरत दृष्टांतों, साक्ष्यों से परिपुष्ट होने पर ही टिक पाता है। जीव-जंतुओं का आपस में संवाद होता है, वे एक-दूसरे की बोली को समझते हैं; लेकिन आदमी उन्हें नहीं समझता या समझने लायक नहीं मानता। जीवों-जंतुओं के स्वर-भाव बेतुके-निरर्थक होते तो उनसे प्राकृतिक जीवन का रहस्य कैसे उद्‌घाटित होता? वर्तमान विज्ञान पदार्थपरक होने के कारण मनुष्येतर प्राणियों के हावभावों पर कम ध्यान देता है। जो वैज्ञानिक तकनीक से प्रमाणित नहीं हो पाया है, उसे अवैज्ञानिक मान लेना उचित नहीं। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में संभावनाएँ असीम हैं, इसलिए अब तक जो नहीं खोजा जा सका, वह आगे शोध द्वारा प्रमाणित हो सकता है।

ऋतुओं की मार से बचने और कृषि-कार्य हेतु मौसम की जानकारी आवश्यक है। पहले लोक और ऋतुओं के बीच कोई मौसम विभाग तो था नहीं, अवलोकन-आकलन सीधे लोक द्वारा होता था। सर्वत्र रहने वाली चींटियाँ, छिपकिलियाँ बरसात के मौसम का पूर्वानुमान देती थीं। सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा प्राकृतिक घटनाओं से तारतम्य मिलाकर लोक सैद्धांतिकी गढ़ी जाती थी। लोकज्ञान के मुताबिक पश्चिम से उठकर बादल पूर्व दिशा में छा जाए तो शाम तक वर्षा होती है -'पच्छमें उठ्‌ठी बदली, पूर्वे लई छाई, हण समझ सँझा जो बरखा आई।' लंबे समय के विहंगावलोकन से सामने आया कि 'करिया बादर जी डरपावै, भूरौ बादर पानी लावै।' क्या यह एक-दो दिन के बादल को देखकर कहा गया होगा? जाहिर है कि नहीं। इसी प्रकार 'जब जेठ चले पुरवाई, तब सावन धूलि उड़ाई' यानी जेठ में पुरवैया हवा चलने लगे, तब समझना चाहिए कि सावन वर्षाहीन रहेगा। जेठ की तेज धूप ठीक मानी जाती है, उसकी तपन से बाद में वर्षा की संभावना बनती है -'जेठ मास जो तपे निरासा, तब जानो बरखा के आसा।' साल में दो सावन लगने पर अकाल पड़ता है -'दो साम्मण, दो भदवे, दो कात्तक दो माह; टांडे ढोर बेच कै नाज बिसावण जा।' रोहिणी और मूल नक्षत्र की तेज धूप के साथ जेठ की प्रतिपदा तपे, तो सातों प्रकार के अन्न उत्पन्न होते हैं -'सर्व तपे जो रोहिणी, सर्व तपे जो मूर; परिवा

तपे जो जेठी की, उपजे सातों तूर।' मीन राशि में मंगल ग्रह के जाने पर बहुत अधिक बारिश होती है -'मंगल डेऊआ मीन, सात पाताड़ हुए सीन।' मार्गशीर्ष की बारिश सोने की अंकुर की तरह होती है -'मँगसरे री मँगसीर, सोने की टीर।' इस संदर्भ में भड्डरी की उक्तियाँ भी पुख्ता प्रमाण मानी जाती हैं -'आद्रा तो बरसै नहीं, मृगशिर पौन न जोय; तौ जानौ यों भड्डरी, बरसा बूँद न होय।' खेतीबाड़ी से संबंधित कहावलियों में किसानी जीवन का सटीक ज्ञान समाविष्ट है, जिसकी अनदेखी आधुनिक किसान भी नहीं करते। किसान को आलस्य, चोर को खाँसी, मूलधन को ब्याज की ऊँची दर तथा हँसी विधवा के लिए काल होती है -

आलस नींद किसान नै खावै, चोर नै खावै खाँसी।
अका ब्याज मूल नै खावै, राँड नै खावै हास्सी।

पहले बैल खेत की जुताई के एकमात्र साधन हुआ करते थे। प्राणी विज्ञान कहता है कि मुड़े सींग वाला, ऊँचा माथा वाला, गोल मुहँ वाला और नरम रोवें वाला चंचल बैल उत्तम होता है -'सींग मुड़े, माथा उठा, मुँह का होवै गोल; रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल।' कृषि-कार्य के लिए लोक नियमावली निर्धारित है, यथा - फसल बुधवार को बोना चाहिए और शुक्रवार को काटना चाहिए - 'बुद्ध बाहणी, सुक्कर बहडणी।' आखिर क्यों? किसी ने इस क्यों का उत्तर जानने का यत्न किया है? खैर, चना, गेहूँ, बाजरे आदि के बोने और काटने का समय ऋतुज्ञान से स्पष्ट है -'चणा पाक्कै चैत म्हे, अर गेहूँ बैसाख विचार; कात्तक पाक्कै बाजरा, अर मँगसर पाक्कै जुआर।' ठेठ देशी विद्या नई ऊर्जा-ऊष्मा से भरपूर करती है। जिज्ञासापरक पहेलियों के माध्यम से तीव्र उत्कंठा, तर्क एवं कल्पना शक्ति को जगाकर बुद्धि कौशल का विकास करने के साथ कार्य का नुस्खा बताया जाता था। जीव-जंतुओं से साम्य दिखलाकर फसल-अन्न के रूपाकार का निदर्शन वैज्ञानिक नजरिये की देन है। एक पहेली है कि 'ए चिरइया ऊँट, ओकर पोर बाजे पुट; ओकर खालरा ओदारू, ओकर मांस मजेदार' अर्थात् ऊँट की तरह ऊँचा पेड़, जिसका छिलका हटाकर चीभने पर मीठा लगता है, वह ईंख है। सैकड़ों दानों वाले मक्के की बाल के लिए ब्रह्मोदय बहुत प्रसिद्ध है -

हरी थी मन भरी थी, लाख मोती जड़ी थी।
राजा जी के बाग में, दुशाला ओढ़े खड़ी थी।।

यात्रा से संबंधित नियमों का आज भी लोग पालन करते हैं। रवि-शुक्रवार को पूरब, सोम-शनिवार को पश्चिम, मंगल-बुधवार को दक्षिण और बृहस्पतिवार को उत्तर दिशा में जाने पर सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह साथ देता है, जबकि इससे विपरीत दिशा में जाने पर दिशाशूल की नकारात्मकता का सामना करना पड़ता है। यदि यात्रा पर निकलने की मजबूरी ही हो तो रविवार को पान, सोमवार को दर्पण, मंगलवार को गुड़, बुधवार को मिठाई, गुरुवार को राई, शुक्रवार को दही और शनिवार को अदरख या उड़द का सेवन करके निकलने से दिशाशूल निष्प्रभावी हो जाता है -'रवि को पान, सोम को दरपन, मंगर को गुर धनिया चरबन; बुध मिठाई, बिहफै राई, सुक्र कहे हमें दही सुहाई।' इसी तरह कपड़ा पहनने के तीन दिन बताए गए हैं -'कपड़ा पहिरिहऽ वार बार, बुध बियफे अवरु शुक्कर वार, भूले भटके इतवार।' चलते समय टोकना अशुभ, शराब का गिरना शुभ और चाय का गिरना अशुभ होता है -'अरक बोगना तेमरेल, चा बोगना कुनमस तोग।' जो व्यक्ति ताजा खाता है और खुले में नहीं सोता, वह निरोग रहता है -'तातौ खाई पटे में सोवै, ताकौ वैद्य पिछारे रोवै।' अच्छी सेहत के लिए कम अथवा संतुलित खाना चाहिए, न कि अधिक -'थोड़ा खाया अंग बधाया, घंणा खाया कूड़ बधाया।' आजकल भी गाँव-शहर में बहुसंख्यक लोग सुबह उठते ही पानी पीते हैं -

प्रातः काल खटिया ते उठिके, पिये तुरतै पानी।
कबहूँ घर में वैद न अइहैं, बात घाघ कै जानी।

प्रत्येक प्रहर का अपना महत्त्व है। प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त है। मुर्गे की बाँग के साथ सुबह-सुबह प्रभाती गाने की परंपरा में परमसत्ता, प्रकृति और पुरुष को जगाया जाता था -'बह्मा का बेद जाग, गौरी गणेश जाग; हरो भरो संसार जाग, जंतु जीवन जाग!' पहले गाँवों में घड़ियाँ तो थीं नहीं, अधिकतर लोग इन्हीं संकेतों से सुबह होने का आभास पाते थे। प्रातः एवं संध्या समय खाना, सोना अस्वास्थ्यकर है - यह लोक आयुर्विज्ञान की स्थापना है। पहर और दिन ही क्यों, हर माह के लिए बनाए गए नियम-निषेध प्राकृतिक तात्विकता के आधार पर प्रमाणित हैं; यथा - सावन में जमीन पर नहीं सोना चाहिए, बिस्तर झाड़कर लगाना चाहिए, क्योंकि साँप-बिच्छू विचरते हैं।

कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पूस में दूध लाभप्रद है -'कातिक मूली, अगहन तेल, पूस में करो दूध से मेल।' चैत्र में गुड़, सावन में साग, भादो में दही नहीं खाना चाहिए - 'कुँवार करेला, चैत गुड़, साम्मण साग ना खा; साम्मण करेला भादो दही मोत नहीं तै जहमत सही।' यदि लंबा जीवन जीना है तो छाछ के साथ केला को तथा दूध के साथ दही को मिलाकर खाने से परहेज करना चाहिए -

तक्र माँहि ना खौ मति केला, एक विरुद्ध करौ मति मेला।
दूध-दही मेला नहिं पीवै, जो माने सुख पावै जीवै।

जब चिकित्सा विज्ञान परंपरागत पद्धति का था, तब प्राकृतिक उपादानों, लोक औषधियों, तंत्र-मंत्रों द्वारा इलाज होता था। साँप के विष को झारने के लिए नरसिंह की नृत्यमयी पूजा होती थी -'आण करू तेरो काज, झार मिया एक बार घर आ।' गाँवों में ऐसे लोग जीवित हैं, जिनका पहले कभी काँसे की थाली और बालू से साँप के काटने का विष उतारा गया था। हिंदी क्षेत्र के आज भी चेचक को माता जी, माता देवी, शीतला माता कहा जाता है। रोगी पर देवी-कृपा बनी रहे, इसलिए बालों को काटने, सब्जी-दाल में हल्दी डालने, छौंकने, रोगी द्वारा प्रणाम करने आदि पर निषेध रहता है, 'तेल बेराया' जाता है और भक्ति गीत गाया जाता है -'निमिया के डाली मइया लावेली हिलोरवा कि झूली झूली।' भारतीय लोक में नीम का पेड़ गुणकारी है। कुछ समय पहले नीम के पेटेंट को लेकर विश्व स्तर पर कितना बखेड़ा छिड़ा था। तुलसी भी परम औषधि है, अनेक रोगों की अचूक दवा है। इसलिए पूजा-अर्चना, प्रसाद तथा भोग-भोज तुलसी के बिना पूर्ण नहीं होते और न ही पवित्र हुए माने जाते हैं -'छप्पन भोग बत्तीसों व्यंजन, बिन तुलसा हरि एक न मानी।' प्रकृति के अणु-अणु में धड़कते प्राणों का स्पंदन लोक ने अनुभूत किया है; इसके विभिन्न घटक पेड़-पौधे, फूल, मनुष्येतर प्राणी के रूप में पुनर्जन्म आत्मा की निरंतरता और मानवीय कर्मफल का वैज्ञानिक प्रमाण है।

जो रूढ़िग्रस्त, जड़, अपुष्ट लगता है, उसे अंधविश्वास कहा जाता है, परंतु यह हमेशा उचित नहीं होता, क्योंकि अपनी ज्ञान-सीमा के कारण जो समझ में नहीं आता, वह गलत ही हो - यह जरूरी नहीं। एक लोकगीत में स्त्री मृत पति से कहती है कि यदि मैं आपकी पतिव्रता पत्नी हूँ तो मेरे आंचल से आग उत्पन्न हो जाए। तत्काल अग्नि उत्पन्न होती है, वह पति की चिता के साथ जलकर भस्म हो जाती है। क्या ऐसा संभव है? द्रव्य वैज्ञानिक रूप से यह बेशक असंभव लगे, किंतु योग-साधना के उच्च धरातल धारणा, ध्यान और समाधि, जिन्हें एक शब्द में 'संयम' कहा जाता है, उसके अंतर्गत समाधि की चरमावस्था में अंतर्धान की गई वस्तुस्थिति की प्राप्ति होती है और इस प्रकार अभीप्सित मृत्यु और उसका कारक भी उपलब्ध होता है। इसलिए ऐसा संभव है।

लोक का शरीर विज्ञान कहता है कि जिस पुरुष की छाती में बाल न हों, उसका विश्वास नहीं करना चाहिए -'जिसदियाँ छातियाँ नी बाल, तिसदा नी करना एतवार।' स्वभाव मृत्यु तक बना रहता है, जैसे गुड़-घी से सींचने पर भी नीम कभी मीठा नहीं हो सकता -'ज्याँ रा पड़िया सुभाव, जासी जीव सूँ, नींब न मीठौ होय, सींचौ घी गुल सूँ।' दूसरों की बुद्धि से गृहस्थी नहीं चलती -'बेगानी बुद्धि, ता घर कुद्दर्दी।' हमेशा अपनी बुद्धि और दूसरों का धन अधिक लगता है -'अपणी अकल होर दुज्जे रा धन बौहू जाणदा।' व्यावहारिक विज्ञान मानता है कि वैद्य, मिस्त्री, महाराज पेट भरे हुए चाहिए; कौआ, कुत्ता, बाज भूखे ठीक हैं; पत्नी, समधी और नौकर मीठे होने चाहिए और तेल, तंबाकू और अफीम कड़वे होने चाहिए -

तिन्नो रज्जे चाहिए - वैद, राज, महाराज।
तिन्नों भुक्खे चाहिए - काउवा, कुत्ता, बाज।
तिन्नो मीठे चाहिए - जोरू, कुड़म, कमीण।
तिन्नौ कौड़े चाहिए - तेल, तमाखू, फीम।

लोक के विज्ञान में प्राकृतिक हलचलों, प्राणिमात्र के भौतिक हावभावों एवं मनःस्थितियों का संतुलित समन्वय व सामंजस्य है, अलोक अथवा अलौकिक दुनियाँ तक पहुँच है। इस प्रकार प्रकृति और अलोक अथवा लोकोत्तर से संवाद का सशक्त अनुसंधान क्षेत्र है लोक और उसका विज्ञान। भारत का परंपरागत ज्ञान चाहे वेद वांग्मय का हो या लोकक्षेत्र का, वह विज्ञानपरक होने की वजह से अनंत संभावनाओं का द्वार है; अनेक वैज्ञानिक अनुसंधानों-आविष्कारों का सायास या अनायास मूल है, फिर भी इस पर यथेष्ट शोध-कार्य करने की महती आवश्यकता है।